B.A II Part
Hindi Hons

22/2/2021

अध्याय:—

डॉ० [illegible] कुमार
[illegible]

भारतेन्दु के प्रभाव से उनके समकालीन कई साहित्यकारों ने नाटक लिखा। इस काल के नाटककारों में भारतेन्दु के अतिरिक्त प्रमुख नाटककारों में प्रतापनारायण मिश्र और राधाकृष्ण दास का नाम उल्लेखनीय है। मिश्र जी ने गोसंकट, कलि कौतुक, भारत दुर्दशा, हठी हम्मीर नामक चार नाटक लिखे। राधाकृष्ण दास ने महारानी पद्मावती, महाराणा प्रताप, दुःखिनी बाला नामक अत्यन्त सुन्दर ऐतिहासिक नाटकों का निर्माण किया। इन लेखकों के अतिरिक्त श्रीनिवास दास ने रणधीर प्रेम मोहिनी, संयोगिता स्वयंवर, तप्तासंवरण तथा [illegible] ने भारत सौभाग्य नामक नाटक लिखा। बाबू गोकुलचन्द का बूढ़े मुँह मुँहासे लोग चले तमाशे, बाबू केशव राम का सज्जाद संबुल, समसार शमशाद, [illegible] का मृच्छकटिक, अम्बिकादत्त व्यास का ललिता आदि नाटक भी विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हैं तथापि साहित्यिक दृष्टि से इन नाटकों का कोई विशेष महत्व नहीं। इनमें मौलिकता और आधुनिक नाट्यशिल्प गुणों का अभाव है। इन नाटकों की दो विशेषताएँ हैं — (1) देवता, राक्षस, अलौकिक शक्तियों के स्थान पर मनुष्य की बुद्धि और भावों के [illegible] तथा (2) पद्य के स्थान पर खड़ी बोली गद्य का प्रयोग। इस काल के नाटकों में अनूदित नाटकों का भी पर्याप्त योगदान है। अनुवाद मुख्यतः बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत से हुए। इनमें कुछ नाटक अत्यन्त लोकप्रिय हुए। ऐसे अनुवादकों में गंगा प्रसाद [illegible], पुरोहित गोपीनाथ, मथुरा प्रसाद उपाध्याय, रूप नारायण पाण्डेय, रामकृष्ण वर्मा आदि प्रमुख हैं।

अनूदित नाटकों के अतिरिक्त इस काल में अनेक मौलिक नाटकों की सर्जना भी हुई। इन मौलिक नाटकों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वे जिन पर पारसी नाट्य कला का प्रभाव था। 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में पारसी नाट्य कंपनियों की स्थापना हुई। उनके अपने अपने नाटककार थे। ये कंपनियाँ इन्हीं नाटकों का अभिनय किया करती थी। इन नाटककारों में राधेश्याम कथावाचक, नारायण प्रसाद बेताब, आगा हश्र कश्मीरी और हरिकृष्ण जौहर प्रमुख हैं। दूसरे श्रेणी में वे नाटककार हैं जिनमें दृश्य काव्य की अपेक्षा श्रव्य काव्य के गुण अधिक हैं। इनमें मिश्र बन्धु, बदरीनाथ भट्ट, राय देवी प्रसाद पूर्ण, मैथिलीशरण गुप्त, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि का नाम लिया जाता है। इन नाटकों पर भारतेन्दु का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित किया जाता है। इसके बाद के नाटककारों